एक राष्ट्रभाषा हो भारत की
एक हृदय हो भारत जननी। -- महात्मा गांधी

क्षितिज

वर्ष 2018 अंक 24

प्रधान संरक्षक
श्री आर.एन.दाश, प्रधान नियंत्रक

संरक्षक
श्री आर.एन. विश्वास, नियंत्रक

मुख्य संपादक
श्री एस के घोष, सहायक नियंत्रक

संपादन परामर्श
श्री एस के घोष, सहायक नियंत्रक
श्री मनोरंजन आचार्य, वरि. लेखा अधिकारी
श्री अरूणेंदु पंडा, सहा. लेखा अधिकारी

संपादन सहायक
श्री नूर आलम, वरिष्ठ अनुवादक
श्री विवेक कुमार, कनिष्ठ अनुवादक
श्री परितोष पाल, वरिष्ठ लेखा परीक्षक
श्री देबब्रत सरकार, वरिष्ठ लेखा परीक्षक

छाया-चित्रकार
श्री सुब्रत दत्ता, वरि.लेखा परीक्षक

प्रकाशक
कार्यालय, प्रधान लेखा नियंत्रक (निर्माणियां)
10ए, शहीद खुदीराम बोस रोड, कोलकाता - 700 001

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं/लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

भारत सरकार , रक्षा मंत्रालय
प्रधान लेखा नियंत्रक (निर्माणियां)
'आयुध भवन'
10- ए , शहीद खुदीराम बोस रोड,
कोलकाता -700001

श्री आर.एन. दाश, भा.र.ले.से.
प्रधान लेखा नियंत्रक

प्रधान लेखा नियंत्रक की कलम से

प्रधान लेखा नियंत्रक (फैक्टरीज), कोलकाता संगठन की हिंदी गृह पत्रिका 'क्षितिज' का चौथा ई-अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे हर्ष की अनुभूति हो रही है।

मैं जानता हूं कि ई-पत्रिका की रचनाओं का पाठकवर्ग काफी विस्तृत भूभागों में फैला होता है और इसके लिए रचनाएं लिखते रहने से रचनाकारों के हिंदी में पठन-पाठन के शौक में भी वृद्धि होती है। इसके परिणामस्वरूप राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के हमारे संवैधानिक दायित्व के निर्वाह में गति हमें प्रत्यक्ष दिखाई देता है।

श्री आर.एन. विश्वास, लेखा नियंत्रक (फैक्टरीज) सहित 'क्षितिज' के संपादक-मंडल को मेरी हार्दिक बधाई। आशा है पत्रिका का यह अंक न केवल निर्माणी लेखा संगठन बल्कि इनकी सहयोगी संस्थाओं एवं रक्षा लेखा विभाग के अन्य कार्यालयों में भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में अपना सफल योगदान दे पाएगा।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित !

आर.एन. दाश

सत्यमेव जयते

भारत सरकार , रक्षा मंत्रालय
प्रधान लेखा नियंत्रक (निर्माणियां)
'आयुध भवन'
10- ए , शहीद खुदीराम बोस रोड,
कोलकाता -700001

लेखा नियंत्रक की कलम से

जैसा कि विदित है कि भारतीय संविधान की विभिन्न धाराएं भारत सरकार की राजभाषा नीति का स्रोत हैं। राजभाषा नियमावली, 1976 के नियम 12 के तहत अपने कार्यालय में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन एवं राजभाषा का प्रचार-प्रसार करना सभी कार्यालय प्रधान का दायित्व है। विभिन्न प्रेरक कार्यक्रमों का आयोजन कार्यालय में करके कार्यालय प्रधान अपने इस दायित्व का पालन करते हैं। उन कार्यक्रमों में से हमारा एक सफल एवं महत्वपूर्ण कार्य है इस संगठन के ई-हिंदी पत्रिका 'क्षितिज' का प्रकाशन।

'क्षितिज' का चौथा ई-अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। इस अंक की सहज-सरल भाषा में प्रकाशित रचनाएं आपको आनंदित करेंगी। हिंदीतर भाषी पाठक दैनिक व्यवहार की हिंदी से परिचित हैं। हिंदी के इसी व्याहारिक रूप को अधिक से अधिक पाठक तक पहुंचाना हमारा लक्ष्य है। आशा है कि आपको हमारा यह प्रयास सफल प्रतीत होगा।

मैं माननीय प्रधान लेखा नियंत्रक महोदय के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं। उनके प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन से ही यह अंक लक्ष्य के अनुरूप प्रकाशन योग्य बन पाया है। कार्यालय के सभी उच्चाधिकारी एवं कार्मिक भी हार्दिक बधाई के पात्र हैं।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित !

आर.एन. विश्वास

संपादकीय

जैसा कि विदित है कि राजभाषा हिंदी साहित्यक हिंदी से थोड़ी सी भिन्नता लिए हुए है। यह ढांचा में तो साहित्यिक हिंदी जैसी ही है परंतु शब्द भंडार में ज्यादा उदारता लिए हुए है। मुख्यत: संस्कृत के शब्द और गौणत: अन्य भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्द राजभाषा हिंदी के शब्द परिवार हैं। यानि कार्यालय की भाषा सरल सहज और प्रचलित शब्दों वाली हिंदी है।

राजभाषा के इस सरल रूप का रचनाकारों एवं पाठकों में व्यापक प्रचार प्रसार करना ही विभिन्न राजभाषा पत्रिकाओं का उद्देश्य होता है ताकि कार्यालय में हिंदी को अधिकाधिक प्रयोग में लाने में कार्मिकों की हिचकिचाहट धीरे-धीरे घटती जाए।

इसी उद्देश्य से प्रेरित पत्रिका के इस अंक में आप लेखा नियंत्रक, खडकी निर्माणी समूह, श्री विजय कुमार की दो कविताएं 'आपके सपनों में' एवं 'क्या भूलूँ' सहित, 'स्वच्छता' एवं 'इंतजार' कविताओं एवं ' भारत की राजभाषा हिंदी ' का भी अवलोकन कर पाएंगे । सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान आयोजित की गई निबंध प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों की रचनाएं भी इस अंक में शामिल की गई हैं । 'कैलास-मनसरोवर की यात्रा,' 'महक', '10 अक्टूबर- एक अंजान शख्स की पुण्यतिथि', 'स्वदेश प्रेम बनाम भ्रष्टाचार विरोध' आदि रचनाओं का भी आनंद पाठक उठा पाएंगे।

इस अंक के सुचारू प्रकाशन के लिए मैं प्रधान लेखा नियंत्रक महोदय के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ जिनकी प्रेरणा 'क्षितिज' के वर्तमान अंक के रूप में साकार हो सकी है। पत्रिका प्रकाशन के दौरान हमारा मार्गदर्शन करने के लिए लेखा नियंत्रक (फै.) एवं अपर लेखा नियंत्रक (फै.) का भी मैं हार्दिक आभारी हूं।

'क्षितिज' के लिए अपनी रचनाएं उपलब्ध कराने वाले रचनाकार, पाठकवृंद, प्रेरित कार्मिकगण, रचनाओं के स्रोत तथा प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से इसके प्रकाशन में सहयोग देने वाले महानुभावों के प्रति भी मैं अपना अशेष आभार प्रकट करता हूँ। आपकी सकारात्मक प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा में -

हार्दिक शुभकामनाओं सहित !

भवदीय

(एस.के. घोष)

जनभाषा के बिना जनतंत्र धूरा है
और राष्ट्र गूंगा । - महात्मा गांधी

क्षितिज

इस अंक में

क्रम सं.	विषय	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	आपके सपनो में	श्री विजय कुमार	01
2.	क्या भूलूं	श्री विजय कुमार	02
3.	आजादी से आगे	श्री नूर आलम	03
4.	आजाद बने रहने की जिद	श्री देबब्रत सरकार	05
5.	आजादों की जिम्मेदारी	श्री विवेक कुमार	06
6.	आजाद अभिलाषा	श्री मिथिलेश कुमार	08
7.	कैलाश मानसरोवर यात्रा	श्रीमती मौमिता चंद्रा	10
8.	स्वच्छता	श्री प्रशांत सक्सेना	12
9.	10 अक्टूबर, एक अंजान...	श्री अरूण प्रसाद	13
10.	भारत संघ की राजभाषा	श्री बाबुलाल	15
11.	विमुद्रीकरण	श्री एम आर आचार्य (संकलित)	18
12.	इंतजार	श्री उत्तम कुमार दास	23
13.	मेरा लक्ष्य -- भ्रष्टाचार मुक्त भारत (प्रथम पुरस्कार)	श्री विवेक कुमार	25
14.	मेरा लक्ष्य -- भ्रष्टाचार मुक्त भारत (द्वितीय पुरस्कार)	श्री मिथिलेश कुमार	27
15.	मेरा लक्ष्य -- भ्रष्टाचार मुक्त भारत (तृतीय पुरस्कार)	श्री राहुल कुमार	30
16.	स्वदेश प्रेम	श्री नूर आलम	32
17.	महक	मो. युसुफ रहमानी	35

आपके सपनों में

आपके सपनों में है
मेरी नजर बदनाम क्यों
कुछ पलों का साथ था
सारा सफर बदनाम क्यों
हम तो मौजों में उतरना चाहते थे
किन्तु तुम बैठे रहे ऊँचे तटों पर
हम तो डूबे प्यार की गहराइयों में
पर दुखी थे तुम उमर की सलवटों पर
जब किनारे पर रहे हो
तुम डुबाते नाव मितवा
फिर भला तूफान की
होती लहर बदनाम क्यों
हम लिखा विधि का मिटाना चाहते थे
किन्तु तुम चलते थे किस्मत के सहारे
बस इसी से वक्त की शतरंज पर तुम
जिन्दगी का हर सुनहरी दांव हारे
हार पर ही जब रहे हो
तुम लगाते दांव मितवा
कर रहे तकदीर को फिर
हर पहर बदनाम क्यों

हम तो कांटों से गुजरना चाहते थे
किन्तु तुम धरते रहे पग पुष्प-पथ में
ओढ़ कर के मोह की चादर स्वयं ही
चढ़ चुके थे तुम अहम के स्वर्ण-रथ में
अब संभलते ही नहीं जब
डगमगाते पांव मितवा
फिर भला सीधी-सरल
होती डगर बदनाम क्यों

हम प्रणय के गीत लिखना चाहते थे
किन्तु तुमने पीर भर दी लेखनी में
लाख हमने प्यार का दीपक जलाया
पर अंधेरा घुल गया है रोशनी में
पीर पथ पर जब रहे
तुम बसाते-गांव मितवा
फिर मिलन का गांव
सुधियों का नगर बदनाम क्यों ?

क्या भूलूं

क्या भूंलू क्या याद करूं
उन जख्मों को भूलूं कि
जख्म देने वालों को भूलूं
दर्द देने वालों के भूलूं
छल को भूलूं या,
छलने वालों को भूलूं
क्या भूलूं क्या याद करूं
हर चोट बना केचली गयी
अपना निशां
करती है बयां जो
चुपके से
और पूछती है
क्या तुमने चाहा था
सिर्फ चोट ही
मिलती रहे वो यूं ही।

विजय कुमार, भा.र.ले.से.
वित एवं लेखा नियंत्रक(फै),
खड़की निर्माणी समूह

आजादी से आगे

आजादी से आगे
काका,
अब आजादी के
कुछ ही सेनानी शेष हैं,
और, शेष हैं,
कुछ ही जोश-खरोश,
कुंठा , आत्मग्लानि,
जातीय बिरादराना-
जिनसे आजादी की
अलख जगी, और
मिली हमें-
टूटी-फूटी,
टुकड़ों में बंटी
रोती-बिलखती
तार-तार आजादी।

**

मित्रों,
अभी हम
माथा ठोकते हुए
'आजादी' के मायने
तलाश रहे हैं
और उसे
बिना अखंड
जातीय भाव के,
ठोक-ठोक कर
बिठा रहे हैं
अपने दिलो दिमाग में,
क्योंकि-
हमें तार-तार मिली
'आजादी' के
रस्मो-रिवाज

जो पूरे करने हैं,
आधे दिलो दिमाग से
देखे गए सपनों,
निर्धारित लक्ष्यों को
'देशी बोतल में
विदेशी शराब भरने की तरह'
पूरे करने हैं,
क्योंकि- केवल यही संभव है,
बिना अखंड जातीय भाव के ।

जय हिन्द।

श्री नूर आलम, वरि. अनुवादक
हिंदी कक्ष, मु.का., कोलकाता

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य का गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता ।

- डॉ. राजेंद्र प्रसाद

आजाद बने रहने की जिद

सहनागरिकों !
अभी तो
आजादी के शोर में
यथार्थ आजादी गुम है,
और जमीं दोज है
आजाद देश को
आजाद बनाए रखने
का जिद्दी भाव,
जातीय भाव,
जनतंत्र के देशी मायने,
देशी स्वाद , देशी स्वभाव,
देशी चरित्र,
जो नकारात्मक रूप से
विदेशी न हो -
जिससे समाज हिले नहीं,
परिवार डरे नहीं,
राष्ट्र डिगे नहीं,
प्रगति चहुँ ओर हो,
रोटी-बेटी सुरक्षित हो,
और, सुरक्षित हो,
हमारी आजादी,
जो सहनागरिकों की
आजादी का पक्षधर हो
उसका प्रबल और,
अहिंसक समर्थक हो ।

जय हिंद !

देबब्रत सरकार, वरि. ले. परिक्षक,
हिंदी कक्ष, मु.का., कोलकाता

आजादों की जिम्मेदारी

साकिया !
आजादी का जश्न
मनाना अभी बाकी है,
भूखों को निवाला
देना अभी बाकी है,
अभी तो बच्चियां
जन्म भी न ले पातीं,
बच्चे,
मां की गोद में ही नहीं,
स्कूलों में, बसों में,
अस्पतालों में भी,
दरिदों की हवश के,
मौत के, शिकार हो जाते हैं ।
अभी तो देनी है
खिलने की आजादी
इन फूलों को, और
पैदा करना है, इनमें
देशी नजरिया,
एकता का भाव
देशी शिष्टाचार,
आगे बढ़ने की ललक,
स्वावलंबन का हुनर,
और,
बताना है उन्हें
जनतंत्र की चार
टांगों के बारे में,
और यह भी कि, उन्हें
स्वस्थ रखने की परिस्थिति
तैयार करने की जिम्मेदारी
हमारी है।

****

‘ वस्तु ‘ की तरह
बिकने के विरूदध
उन्हें आगाह करने की
जिम्मेदारी हमारी है !
अपने महामनाओं से ।
नेताओं से,
और खुद से
‘ भ्रष्टाचार या देश ? ’
यह सवाल करने
की जिम्मेदारी हमारी है
यह जिम्मेदारी हमारी है ।

*****

जमा कचरे-
बौदि्धक, सामाजिक,
राजनैतिक, प्लास्टिक आदि-को समझने, हटाने,
बदलने एवं नष्ट करने,
की ‘ जिम्मेदारी ’ हमारी है,
और यह निष्ठा -
कि ‘ यह जिम्मेदारी पूरा
करना पूर्वापेक्षा है,
आजादी का जश्न
मनाने के लिए-’
अपने में पैदा करने
की जिम्मेदारी हमारी है-
समेकित जिम्मेदारी,
सामासिक जिम्मेदारी,
सर्वसमावेशी जिम्मेदारी !
जय हिंद !

श्री विवेक कुमार, कनि. अनुवादक
हिंदी कक्ष, मु.का., कोलकाता

आजाद अभिलाषा

दोस्तों !
अभी तो,
खुद सीखने, जानने
के बाद,
सभी को यह भी-
सिखाना शेष है,
कि-
रिले रेस के
‘ बैटन ’ की तरह
आजादी,
आजादी के
संपूर्ण तत्व-
पयार्वरण,
शिष्ट बोली-व्यवहार,
आथिर्क सफलता
समग्र जातीय भाव,
आदि की निरंतरता का ‘ बैटन ‘
उन्हें, समय के साथ
विरासत के रूप में,
अगली पीढ़ी को
सौंपना जरूरी है,
अवश्यमेव !
****
और,
सौंपना है अगली पीढ़ी को
वह आग-ज्ञान की
जिससे अज्ञान नष्ट हो ।
जल-प्रेम का,
जिससे, समाज में,
राष्ट्र में
एकता-अखंडता बनी रहे ।
सौंधी मिट्टी,

हरा-भरा पर्यावरण-जिससे नई पीढ़ी
पनपे, सुरभित हो,
फलदार बने !
खुला आकाश,
आजाद विचारों का,
जिससे अनेकानेक दृष्टिकोण मिलकर
राष्ट्रीय दृष्टिकोण बन सके
शीतल समीर-
राष्ट्रीय विवेक का,
जिससे आंदोलन के नाम पर,
तोड़फोड़, अशांति,
अर्थहानि के कार्य को
हवा न मिले, और
न मिले ' गारंटेड आजादी '
जब्त करने का अवसर,
किसी चील को !

*****

साकिया !
तब जश्न मना लेना
फूल तोरण सजा लेना,
पैमानों से पैमाना
टकरा लेना
लाल गलीचे बिछा लेना
महामनाओं को
सिर पर बैठा लेना
अपनी बायोग्राफी छपवा लेना,
घर-घर तिरंगा लहरा लेना
घर-घर ' जय हिंद ' उचार लेना ।
घर-घर ' जय हिंद ' उचार लेना,
जय हिंद, जय हिंद, जय हिंद !

श्री मिथिलेश कुमार, भूतपूर्व वरि. अनुवादक
हिंदी कक्ष, मु.का., कोलकाता

कैलास-मानसरोवर यात्रा

कैलाश-मानसरोवर यात्रा एक व्यक्ति की अंतरात्मा की यात्रा के समान है। लगभग 200 किलोमीटर का रास्ता न केवल एक व्यक्ति की शारीरिक क्षमता की परीक्षा लेता है बल्कि उसकी मानसिक स्वस्थता की भी परीक्षा लेता है । जब से इस यात्रा का विचार मन में आया तभी से लेकर यात्रा के दौरान मैंने बहुविध मानसिक उत्तेजनाओं का अनुभव किया।

इस पवित्र यात्रा का उबड़-खाबड़ भू-भाग हमारे मन की जटिलताओं को मुक्त करता है। महादेव की आश्रयस्थली की यात्रा की तीव्र लालसा पवित्र जिज्ञासाओं से मन को भर देती है। यदि मैं अपने सच्चे अनुभव को बताऊँ तो यह कहूँगी कि शायद स्वयं शिव ने मुझे अपने आश्रयस्थल तक मेरा नेतृत्व किया। प्रकाश की तरह मेरा मार्गदर्शन एवं कवच की तरह मेरी चारों ओर रक्षा करती हुई उनकी उपस्थिति को मैं महसूस कर रही थी। यह यात्रा जीवनभर के लिए है। यात्रा जन्य अनुभूति बहुत ही गहरी एवं स्थाई है ।

यह यात्रा दिल्ली की भीड़-भाड़ वाली शहरी सड़क से प्रारंभ होती है। उतराखंड होकर ज्यों-ज्यों हम लक्ष्य की ओर बढ़ते है। विशुद्ध वातावरण के साथ प्रकृति की सुगंध हमारे मन में भर जाती है। बढ़ती उँचाई एवं घटते वायुदाब के साथ हमारा मन हल्का महसूस करने लगता है। एकदम सुबह का ट्रेकिंग अभियान एवं देर शाम यात्री निवास में लौटना एक-एक कर हमारे सभी सांसारिक विचार को हटा देता है। हमारे मस्तिष्क के प्रत्येक कोने में भगवान शिव के समीप जाने का भाव भर जाता है।

एक-दो दिनों में महादेव अब हमारे सामने प्रत्यक्ष हो जाएंगे, उनसे मिलने की सभी की तैयारी अपनी ऊँचाई पर थी । हमलोगों ने अपनी अंतिम क्षण की शॉपिंग तकलाकोट, चीन में पूरी की ।

अर्ध रात्रि के बाद अंधेरे में केवल टॉर्च के प्रकाश में चलते हुए हमलोगों ने अपनी आंखों में आशा की चमक एवं चौंधियाने वाली इच्छा से लिपुलेख पास की ओर यात्रा प्रारंभ की । अंततोगत्वा घड़ी में वह क्षण आया जब मेरी मातृभूमि अर्थात भारत को पार कर, मन में एक छोटे से, हल्के से परिवर्तन की अनुभूति के साथ पैर की नीचे की जमीन मातृभूमि के बदले विदेशी भूमी प्रतीत हुई और हम भारत की सीमा पार कर गए ।

13 अगस्त, 2017, हमारी यात्रा तकलाकोट से सुबह में प्रारंभ हुई । राक्षस ताल एवं मानसरोवर झील की पहली झांकी का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ । हमलोग दारचेन पहुँचे । मैं यह विश्वास नहीं कर पा रही थी कि महादेव मेरे सामने थे । कैलाश पर्वत का दक्षिण भाग दारचेन से दिखाई देता है। मैनें पूरा दिन बिना थके हुए उनको देखती ही रही । उस समय आनंद के अलावे और कोई भाव मेरे मन में नहीं था । उनके आस-पास ऊर्जा की अचानक अधिकता बहुत ही अधिक स्पष्ट थी । मैंने उनकी टेरिटरी उनके आश्रयस्थल में 14 अगस्त, 2017 को प्रवेश किया । हमलोगों ने यमद्वार को पार किया एवं देराफुक

तक का रास्ता ट्रेकिंग कर गए । महादेव-कैलाश पर्वत के चारों ओर हमारी परिक्रमा प्रारंभ हुई । मैंने डेराफुक, महिभावान निर्माता, सकल संसार के संहर्ता, सर्वशक्तिमान को उनकी सर्वोच्च स्थिति में अपनी सभी इंद्रियों से साक्षात्कार किया । भावों की विलक्षणता शब्दों में व्यक्त नहीं की जा सकती है । मेरी जिज्ञासा और भी ज्यादा तीव्र हो गई और " चरण स्पर्श " तक की उच्चतर चढ़ाई मैने ट्रेकिंग कर पूरी की ।

चरण स्पर्श, वह स्थल, वस्तुतः समीपतम प्वाईंट जहाँ से कैलाश पर्वत प्रत्यक्ष हो सकते हैं । पांच घंटे की वह अवधि- चरण स्पर्श तक आने-जाने में व्यतीत अवधि-संसार के स्वामी के साथ एकाकार होने का उच्चतम अनुभव, जहाँ मैं उन्हें देख सकती थी, उनमे संवाद कर सकती थी और निश्चय ही उन्होंने मुझे सुना ।

15 अगस्त, 2017, सर्वोच्च एवं जोखिम भरा यात्रा पथ । डोलमा पास को पार कर हमलोगों को कैलाश पर्वत की परिक्रमा करनी थी । वो जोखिम भरी चढ़ाई, खड़ा उतार एवं ईश्वर का सामीप्य, एक मात्र यही विचार मन में समाए हुए थे । उन क्षणों में सभी सांसारिक लगाव खत्म हो गए थे । अगला पड़ाव था कुजु में 2 दिनों के लिए मानसरोवर के किनारे में निवास का । मानसरोवर झील में पवित्र डुबकी ने पूरे तन-मन को आनंदित कर दिया । वह क्षण जब आत्मा आनंद का अनुभव कर सकती है।

इस सबके बाद सर्वोच्च अनुभूति तब हुई जब हमलोगों ने अपनी मातृभूमि अर्थात भारत में प्रवेश किया । मन में दोनों तरह के भाव विद्यमान थे पहला अपने परिवार के पास लौटने का भाव और दूसरा कैलाश पर्वत से दूर होते जाने का भाव । लेकिन, अवश्य ही कुछ क्षणों के बाद ऐसा अनुभव हुआ कि कैलाश मेरा मन है और उसे मन से निकालना असंभव है। अब मैं शहर की घुटनभरी जिंदगी में लौट आई हूँ । मैं अब भी प्रतिदिन कैलाश पर्वत की यात्रा अपने मन में करती हूँ ।

श्रीमती मोमिता चंद्रा, वरि. ले. परिक्षक
प्रशा. अनुभाग, मु.का., कोलकाता

स्वच्छता

हुई स्वच्छ मेरी सोच जब
अविरल मलयानिल
विश्व विमोहनहारी
काज आपण होई क्रांतिकारी ।।
वृहत कानि स्वच्छ होई लागि
मार्ग,गंग संग
राज छवि स्वच्छ होई लागि
कालखण्ड, रचित होई लागि ।।
हुयी स्वच्छ मेरी सोच जब
काज आपण होई क्रांतिकारी ।।

प्रशांत सक्सेना, स.ले.अ.,
आ.नि. शाहजहांपुर

सभी भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक है तो वो देवनागरी ही हो सकती है ।

- जस्टिस कृष्णस्वामी

10 अक्टुबर, एक अंजान शख्स की पुण्यतिथि

दिनांक 10 अक्टुबर, 2009 की बात है, उस दिन मैं नई दिल्ली से पटना राजधानी एक्सप्रेस से सुबह पहुंचा था। मेरे पहुंचने से पहले पता चला कि रसोईघर में गैस रिसाव के चलते आग लग गई थी जिसको बुझाने के दौरान मेरे बड़े साले बुरी तरह झुलस गए थे । उनको पटना मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया था। मैं उन्हें देखने अस्पताल गया था । शाम के करीब 6 बजे होंगे सूर्यास्त हो रहा था और हल्का सा अंधेरा छा रहा था तभी कुछ समय के लिए मैं गंगा किनारे एक घाट की ओर चल पड़ा । विदित हो कि पटना मेडिकल कॉलेज गंगा के किनारे स्थित है । तभी मैंने एक दुबली-पतली, मैली साड़ी पहने महिला, जिसकी उम्र करीब 40 से 45 के बीच रही होगी,को जोर-जोर से विलाप करते हुए देखा । उससे करीब 50-60 गज की दूरी पर गंगा नदी बह रही थी, यहां कपड़ों में ढकी एक छोटी सी आकृति को देखा । बात समझते देर न लगी, नजदीक पहुंचने पर मुझे फटे हाल स्थिति में एक आदमी से मिला जिसकी उम्र करीब 45 से 50 के बीच होगी । उससे बातचीत के दौरान यह पता चला कि जो आकृति कपड़ों से ढकी थी वह एक छोटे बच्चे की थी जिसकी उम्र 2 वर्ष थी तथा वह आदमी उस बच्चे का अभागा पिता था । कुछ और बाते करने के दौरान उसने बताया कि वह मुंगेर का रहने वाला है तथा उसको इससे पहले कोई बच्चा नहीं था। बहुत प्रतीक्षा के बाद उसे यह बेटा हुआ था । कुछ दिन पहले उसे बुखार आया उसका इलाज मुंगेर में कई जगह कराया लेकिन बाद में डॉक्टर ने पीएमसीएच में निदेशित (रेफर) कर दिया । यहां दिखाने के बाद पता चला कि ब्रेन में पानी आ गया था, इलाज हुआ पर उसे बचाया न जा सका । उसने कहा जो खुशी मुझे बड़ी मुश्किल से करीब 2 वर्ष पहले मिली थी, आज उससे लाख गुणा दुख ईश्वर ने दिया है । अच्छा होता कि वह खुशी मिली ही न होती, कम से कम समुद्र से भी गहरा दुख तो ना देखना पड़ता । इस बातचीत के दौरान वह लगातार विलाप करता रहा, इस बीच कई और लोग भी इकट्ठे हो गये थे । तभी इसकी पत्नी भी पास बैठकर रोते हुए बोली मेरा बच्चा दूध पियेगा हालांकि उसे पता था कि वह अब कभी भी दूध नहीं पी पायेगा । लोगों ने उसे बहुत समझाया लेकिन उसका विलाप बंद नहीं हुआ, वह लगातार एक ही बात बोलती रही कि उसने कभी किसी का बुरा नहीं किया फिर भी ईश्वर ने उसके साथ इतना अन्याय क्यों किया । इस घाट के किनारे एक छोटा सा मंदिर है उसके पुजारी पूजा की तैयारी कर रहे थे । तभी वे अचानक उस औरत को डांटने लगे और उन्होंने कहा कि यहां से जल्दी चले जाओ, यहां मत रोया करो । उसके बाद घाट पर बैठे एक आदमी ने छोटे से उजले कफन में उस बच्चे को लपेटा तथा वह उसे गंगा में प्रवाहित करने के लिए दो सौ रुपये में तैयार हुआ । उसने उस मासूम को एक बांह में पकड़कर गंगा में छलांग लगाई तथा कुछ आगे बढ़कर उसे नदी में छोड़ दिया । वह बच्चा तिनके की तरह कभी पानी के

ऊपर तो कभी पानी के नीचे होता हुआ आगे चला गया तथा उसके माता-पिता अपलक, अश्रुपूर्ण विवश आंखों से देखते रहे जब तक वह उनकी आंखे से ओझल न हो गया ।

वे दोनों आए तो थे बच्चे के साथ मगर बिना बच्चे के ही अपार दुख दिल में लिए अपने गृह जिला मुंगेर की ओर चले गए । लेकिन यह घटना मुझे आज भी ज्यों की त्यों याद है और यदाकदा ये मुझे झकझोर के रख देती है ।

अरूण प्रसाद, स.ले.अधि.
ले.का., ओपीएफ, कानपुर

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना
देश की उन्नति के लिए आवश्यक है ।
- महात्मा गांधी

भारत संघ की राजभाषा : हिन्दी

राजभाषा हिन्दी पर विचार करने से पूर्व राजभाषा के आशय को जान लेना आवश्यक है । राजभाषा का शाब्दिक अर्थ राजा अथवा शासक द्वारा प्राधिकृत भाषा से लगाया जाता है । चूँकि शासक अथवा सरकार को संविधान द्वारा शक्ति प्राप्त होती है । इसलिए राजभाषा भी संविधान से इतर नहीं है । अतः हम कह सकते हैं कि राजभाषा संविधान द्वारा प्राधिकृत वह भाषा है जिसमें समस्त सरकारी काम-काज संपन्न किए जाते हैं और शासकीय आदेश पारित किए जाते हैं |

राजभाषा का प्रयोग बहुत पहले से ही प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से होता आ रहा है । ऋग्वेदिक समाज से लेकर प्राचीन भारत के स्वर्ण युग के नाम से प्रसिद्ध 'गुप्त काल' की राजभाषा जहाँ 'संस्कृत' थी तो तुर्कों एवं मुगलों ने 'फ़ारसी' को अपना शासकीय कार्यों की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया । निष्यंदन के सिद्धांत की व्याख्या करते हुए लार्ड मैकाले ने 1935 में भारतीय संस्कृति को ध्वस्त करने के उद्देश्य से न केवल अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाया बल्कि भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की प्रहरी के रूप में इसे प्राण-प्रतिष्ठित कर इसके विकास एवं प्रसार में अपनी सारी शक्तियाँ झोंक दी । वर्तमान लोकतांत्रिक विश्व के चीन, फ्रांस एवं जर्मनी जैसे विकसित राष्ट्र अपने ही देश की भाषा को राजभाषा के रूप में मान्यता देकर विश्व शक्ति के क्रम में अपना नाम गिनाने में सफल हुए हैं ।

आधुनिक भारतीय परिप्रेक्ष्य में राजभाषा का सर्वप्रथम विचार सी. राजगोपालाचारी ने दिया । जैसा कि यह सर्वविदित है कि महात्मा गाँधी ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने पर जोर दिया और कहा कि यही एकमात्र ऐसी भाषा है जो भारत में सामजिक एवं सांस्कृतिक एकता लाने में सक्षम है । 'राजाजी' ने राष्ट्रभाषा और राजभाषा में अंतर स्पष्ट करते हुए इसके लिए 'राज्य भाषा' अर्थात् 'स्टेट लैंग्वेज' शब्द का प्रयोग किया । बाद में संविधान का मसौदा तैयार करते समय 'राजभाषा' शब्द का प्रयोग उचित समझा गया और 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी को भारत संघ की राजभाषा अर्थात् ऑफिसियल लैंग्वेज के रूप में स्वीकार किया गया |

संविधान में भाग-17 ही वह स्थल है, जहाँ जलरूपी नौ धारायें (अनुच्छेद- 343 से 351) हिन्दी को सिंचित करते हुए इसे पल्लवित एवं पुष्पित करती है तथा इसे अधिकार संपन्न बनाती है । जिसके परिणामस्वरूप राजभाषा संकल्प-1968 तथा राजभाषा नियम-1976 एवं समय-समय पर संसदीय राजभाषा समिति की संस्तुतियों पर राष्ट्रपति की अनुशंसा पाकर हिन्दी और विकसित एवं शक्तिशाली बनता गया । रही-सही कसर 'वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली

आयोग' , 'विधि आयोग' , 'केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो' एवं 'केंद्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान' ने पूरा कर दिया ।

वर्तमान युग के हिन्दी जगत के प्रसिद्ध आलोचक आचार्य नामवर सिंह का मानना है कि हिन्दी को सर्वाधिक खतरा शुद्धतावादियों से है । इस दृष्टि से राजभाषा विभाग की दरियादिली उनके विचारों से काफी मेल खाती है | इनके यहाँ हिन्दी लेखन की छोटी- मोटी अशुद्धियाँ क्षम्य हैं । वास्तव में अंग्रेजी में बीस गलती करने से तो हिन्दी में दस गलती करना अच्छा है |

आजकल भारत में हिन्दी समाचार-पत्र एवं पत्रिकाओं की बाढ़ सी आ गई है । विज्ञान, राजनीति, अर्थ, खेल एवं समाज से जुड़े विभिन्न विषयों पर लेखों एवं विविध विधाओं की भरमार है । इस संबंध में मुझे एक प्रसंग की याद आती है, " एक बार महात्मा बुद्ध जंगल से होकर गुजर रहे थे तभी रास्ते में एक डाकू मिला और बोला, 'ठहर जा' । महात्मा बुद्ध तुरंत रूक गए और बोले, 'मैं तो ठहर गया, लेकिन तू कब ठहरेगा?' यह बात केंद्रीय सरकार के कार्मिकों पर काफी हद तक लागू होता है । गैर सरकारी प्रयासों ने हिन्दी के विकास में बढ़-चढ़कर अपनी भूमिका निभाई है जबकि सरकारी प्रयत्नों में इस दिशा शिथिलता दिखाई पड़ती है । भारतीय संविधान में अनुच्छेद-351 में संघ सरकार को हिन्दी के प्रसार का दायित्व सौंपे जाने के बावजूद भी कुछ संकीर्ण स्वार्थी तत्वों के द्वारा इसका गला घोंटा जा रहा है जिसके कारण इसके विकास की किरण मद्धिम पड़ती दिखाई दे रही है ।

आज जिस प्रकार से विश्व नेतृत्व की दिशा बदल रही है । ऐसे में भारत को आर्थिक विकास के साथ-साथ सामाजिक, राजनैतिक, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में नवाचार को अपनाकर सबका साथ एवं सबका विकास की विचारधारा को वास्तव में क्रियान्वित कर अपनी स्थिति सुदृढ़ कर लेनी चाहिए । देश के बहुसंख्यक आबादी को हासिए पर छोड़कर इस लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता है । हिन्दी ही वह एकमात्र भाषा है जो इस अछूते जनसंख्या तक अपनी पहुँच बनाकर एक आम हिन्दुस्तानी का अच्छे दिन ला सकती है और देश की कृषि आधारित अर्थव्यवस्था को ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था में तब्दील कर सकती है । वरना पाकिस्तान सरीखे अस्थिर देश जिसने अभी हाल ही में एकमात्र 'उर्दू' को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया है, सभी क्षेत्रों में भारत से बेहतर स्थिति में होगा ।

अंत में भारतेंदु जी की उन पंक्तियों मैं सूत्र रूप में प्रस्तुत कर रहा हूँ जिसमें उन्होंने कहा था -

" निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल |
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को शूल ||"

जय हिन्द ! जय हिन्दी !

बाबुलाल, कनि. अनुवादक
ले.का., आ.नि., शाहजहांपुर

**यद्यपि मैं उन लोगों में से हूँ, जो चाहते हैं
और जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की
राष्ट्रभाषा हो सकती है ।**

- लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

विमुद्रीकरण

आठ नवंबर, 2016 को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने ऐलान किया कि 500 और 1000 रुपए के नोट अब चलन में नहीं रहेंगे । काले धन के खिलाफ इसे पीएम मोदीजी की अब तक की सबसे बड़ी लड़ाई मानी जा रही है । पीएम मोदी ने जो ऐलान किया उसे 'डिमॉनेटाइजेशन' या विमुद्रीकरण या मुद्रा को चलन से बाहर करना कहते हैं। ऐसा नहीं है कि सिर्फ भारत ने ही यह कदम उठाया है इससे पहले भी कुछ देश ऐसा कर चुके हैं।

क्या होता है विमुद्रीकरण

विमुद्रीकरण वह मौद्रिक फैसला होता है जिसके तहत मुद्रा की एक इकाई को कानून के तहत अमान्य घोषित कर दिया जाता है । यह साधारणतय उस समय होता है जब राष्ट्रीय मुद्रा में परिवर्तन किया जाता है और पुरानी मुद्रा को नई मुद्रा से बदला जाता है । इस तरह के कदम उस समय उठाए गए थे जब यूरोपियन मौद्रिक संघों वाले देशों ने यूरो को अपनी मुद्रा के तौर पर अपनाया था । उस समय पुरानी मुद्रा का विमुद्रीकरण किया गया था । हालांकि, एक समय तक यूरो में पुरानी मुद्रा बदलने की मंजूरी दी गई थी ताकि लेन-देन में सुविधा बनी रहे ।

भारत ने क्यों अपनाया

भारत ने ब्लैक मनी और फेक करेंसी को खत्म करने के लिए इस व्यवस्था को अपनाया है । यह भी काफी रोचक है कि यह पहली बार नहीं है जब सरकार ने इस तरह का कोई कदम उठाया है । सबसे पहले वर्ष 1946 में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) ने विमुद्रीकरण को अपनाया था । उस समय आरबीआई ने 1,000 और 10,000 के नोट जारी किए थे । वर्ष 1954 यानी आठ वर्ष बाद में भारत सरकार ने 1,000, 5,000 और 10,000 के नए नोट जारी किए । इसके बाद वर्ष 1978 में मोरारजी देसाईजी की सरकार ने इन नोटों को चलन से बाहर कर दिया था ।

अब तक निम्नलिखित देशों में विमुद्रीकरण को आजमाया गया है । परिणाम भी भिन्न-भिन्न रहे हैं :-

1. जिम्बॉव्वे

वर्ष 2008 में जिम्बॉव्वे अपनी मुद्रा की कीमत खत्म होने के बाद महंगाई की मार झेल रहा था और किसी को समझ ही नहीं आ रहा था कि अब क्या किया जाए । इसके बाद जून 2015 में यहां के रिजर्व बैंक ने फैसला किया कि देश ने अब कई मुद्राओं वाले सिस्टम को अपना लिया है । वर्ष 2009 में जिम्बॉव्वे ने मुद्रा को डॉलर में बदल दिया था । ऐसे में जरूरी हो गया था कि जिम्बॉव्वे की डॉलर यूनिट को कई मुद्राओं में बदला जाए । जिम्बॉव्वे के सेंट्रल बैंक ने कहा था कि ग्राहकों को प्रोत्साहित करने और व्यापार में भरोसा बढ़ाने के लिए यह काफी अहम है।

2. सिंगापुर

सिंगापुर में जापानी 'बनाना' नोटों को उस समय जारी किया गया जब जापान ने इसका अधिग्रहण किया था । जापानियों के सरेंडर के बाद वर्ष 1945 में इस मुद्रा को बाहर कर दिया गया और फिर सिंगापुर मिंट को अपनाया गया ।

3. फिजी

फिजी में 13 जनवरी 1969 को विमुद्रीकरण को अपनाया गया । यहां के रिजर्व बैंक ने उस समय कहा कि पौंड और शिलिंग का विमुद्रीकरण काफी जरूरी है क्योंकि फिजी अब नई व्यवस्था को अपना रहा है और नई मुद्रा को जारी करेगा । बैंक ने कहा था कि कि पौंड और शिलिंग की एक सीमित मात्रा ही चलन में है ।

4. फिलीपींस

फिलीपींस के सेंट्रल बैंक ने 12 जून 1985 को नई डिजाइन वाले बैंक नोटों को चलन से बाहर करने का फैसला लिया था । इसके बाद 10 वर्षों से चलन में मौजूद मुद्रा को बंद कर दिया गया ।

मुद्रीकरण के प्रभाव

नोटबंदी के पीछे सरकार का मंतव्य ये है की इसके कारण ब्लैक मनी में कमी आएगी, नकली नोट के परिचलन, आतंकवाद आदि गतिविधियों में लगाम लगेगी । हालांकि सरकार की मंशा कहीं से गलत नजर नहीं आती फिर भी कई वर्ग ऐसे है जो नोटबंदी से खुश नहीं है ।

इन 7 देशों में विफल रहा है करेंसी सुधार का प्रयोग

1. ब्रिटेन

ब्रिटेन में 1971 से पहले पौंड, शेलिंग और पेन्स का चलन था, 1971 में सरकार ने करेंसी को एकरूपता में लाने के इरादे से इन पहले से चलन में रही करेंसी को बंद कर 5 और 10 पैसे के नए सिक्के लाकर उन्हें पूरी तरह बदल दिया, हालांकि सरकार इन बदलाव से पहले दो सालों तक जनता को इसके बारे में बताती रही थी । ब्रिटेन सरकार काफी बेहतर तरीके से इन बदलाव को लाने में सफल रही थी । ब्रिटेन को छोड़ बाकी कई देश अपने इस प्रयास में विफल रहे ।

2. सोवियत यूनियन

मिखाइल गोर्बाचेव सरकार ने साल 1991 में कालाधन को खत्म करने के इरादे से 50 और 100 रूबल के नोटों को बैन कर दिया था । सरकार का अनुमान था कि उसके इस कदम से कालेधन में कमी आएगी और लोगों को सहूलियत होगी । हालांकि सरकार की यह मंशा कामयाब नहीं हो सकी इसके उलट लोगों का सरकार के प्रति संदेह का नजरिया विकसित हो गया और इसी कारण गोर्बाचेव सरकार को तख्तापलट के प्रयास का भी सामना करना पड़ा ।

3. नार्थ कोरिया

साल 2010 में तानाशाह शासक किम जोंग-II ने ब्लैक मार्केटिंग में कमी लाने और अर्थव्यवस्था को और बेहतर करने के इरादे से करेंसी के प्रारूप में कुछ बदलाव किए, हालांकि किम जोंग के इस फैसले का उल्टा असर वहां की अर्थव्यवस्था पर देखने को मिला, जरुरी चीजों के दाम में काफी वृद्धि हो गयी जिसका असर यह रहा कि लोगों में गुस्से का माहौल दिखने लगा । नतीजतन किम जोंग ने वहां के वित्त मंत्री को मार कर फैसले के लिए माफी मांगी।

4. कांगो

तानाशाह मोबुतु सेसे सको ने 1990 के दौर में अर्थव्यस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए नोटों के प्रारूप में कुछ बदलाव किए, हालांकि इन बदलाव का कोई बेहतर असर वहां की अर्थव्यवस्था पर नहीं दिख सका इसके उलट महंगाई बढ़ी और शेयर बाजारों में काफी गिरावट देखने को मिली ।

5. म्यांमार

1987 में मिलिट्री सरकार ने भारी नोटबंदी करवाई । सोच वही थी- काला-बाज़ारी और काले धन पर रोक लगाना । देश में राजनीतिक प्रदर्शनों का सिलसिला शुरू हो गया और इस पर लगाम लगाने के चक्कर में हज़ारों लोगों की मौत हुई ।

6. घाना

1982 में सरकार ने 50 कैडी का नोट बंद कर दिया. सरकार ने सोचा था कि टैक्स चोरी, धांधली और काला-बाज़ारी रोकने के लिए इस सख्त कदम की जरुरत है. लेकिन इस से लोगों का देश की अर्थनीति से भरोसा उठ गया और कुछ दिन बाद जब एक्सचेंज का समय खत्म हुआ तो सरेआम नोटों के बंडल पड़े हुए मिले।

7. नाइजीरिया

1984 में जब मुहम्मद बुहारी राष्ट्रपति थे तब उन्होंने देश की अर्थनीति की खस्ता हालत को देखते हुए नए डिजाइन और रंग की करेंसी को चालू किया. ये नोटबंदी अर्थनैतिक स्थिति तो नहीं सुधार पायी पर बुहारी को सत्ता छोड़नी पड़ी और काफी लंबे समय तक फिर वो सत्ता से बाहर ही रहे । उन्हें दोबारा देश का राष्ट्रपति बनने में 21 साल लग गए जब वो 2015 में फिर नाइजीरिया के राष्ट्रपति चुने गए.

भारत में नोटबंदी का सकारात्मक प्रभाव

आयकर विभाग ने 17.92 लाख ऐसे लोगों का भी पता लगाया है जिनके कर भुगतान का ब्यौरा उनके खातों में 30 दिसंबर 2016 को समाप्त 50 दिन की अवधि के दौरान की गई नकद जमा के साथ मेल नहीं खाता है। विभाग ने शुरूआती दौर में इन लोगों से जमा की गई राशि के स्रोत के बारे में ऑनलाइन जानकारी मांगी है ।

सेंट्रल बोर्ड ऑफ डायरेक्ट टैक्स (सीबीडीटी) ने एक बयान में कहा है कि चालू वित्त वर्ष में दाखिल आयकर रिटर्न 25 फीसदी बढ़ा है । व्यक्तिगत आयकर की अग्रिम कर संग्रह में 41% की बढ़ोतरी के साथ, एक ही समय में प्रत्यक्ष कर संग्रह में भी बढ़ोतरी देखी गई थी। प्रत्यायन और ऑपरेशन स्वच्छ धन के परिणामस्वरूप, आयकर रिटर्न (आईटीआर) की संख्या में पर्याप्त वृद्धि हुई है । वित्त वर्ष 2016-2017 की इसी अवधि के दौरान दर्ज 2,26,97,843 के मुकाबले 5 अगस्त, 2017 तक दर्ज कराए गए रिटर्न की संख्या 2,82,92,955 है, जो 9.9 की वृद्धि दर की तुलना में 24.7 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है ।

समय ही यह बता पाएगा कि 'नोटबंदी' का उद्देश्य किस हद तक सफल हुआ । ऐसे बड़े निर्णय में जहां उद्देश्य की गुणवत्ता का काफी महत्व होता है उससे कहीं ज्यादा महत्व 'कार्यान्यन के तरीके' की श्रेष्ठता का है जिससे नागरिकों पर इस बड़े बदलाव का न्यूनतम नकारात्मक प्रभाव पड़े । हमें आशावादिता के साथ इसके सकारात्मक प्रभाव की अपेक्षा रखनी चाहिए और गंभीरता से इसका इंतजार करना चाहिए ।

संकलनकर्त्ता -
श्री मनोरंजन आचार्य, व.ले.अ.
मुख्य कार्यालय, कोलकाता
(डाटा स्रोत - इंटरनेट)

इंतजार

कभी ज्यादा इंतजार किया , कभी कम
कभी कुछ मिला, कभी नहीं मिला,
तब भी इंतजार किया ----------।
घर में बच्चे-बीबी इंतजार कर रहे हैं
कब लौटकर आयेंगे----------।
रास्ते में इंतजार बस का
बस मिली तो बैठने का
बैठने की जगह मिली तो, उतरने के समय का
बस, इंतजार ही इंतजार ।
सुबह से इंतजार किसी को किसी के मिलने का ।
पर क्या पता ----------।
मिल पायेगें या नहीं
ये तो इंतजार ही बतायेगा।
इंतजार किया है इंतजार का ---
हर पल, हर समय का
सेकेन्ड, मिनट,आवर,
दिन, महीना, साल
इंतजार , इंतजार -------।
पड़ोसी इंतजार कर रहा है, कब बनेगा मेरा मकान
दूसरा इंतजार कर रहा है, कब खुलेगी मेरी दुकान
तीसरा इंतजार कर रहा है, कब होगी मेरी शादी
मैं इंतजार कर रहा हूँ, कब मिलेगी महीने का तनख्वाह-----।
आप किसका इंतजार कर रहे हैं
बैठना या जाना
रहना या करना
देखना या सोचना-------।
पावर गयी तो इंतजार, कब आयेगी पावर
पे कमिशन बैठेगा------उसका इंतजार।
इनक्रिमेन्ट का---------प्रमोशन का
डीए कितना आयेगा उसका इंतजार।

कब मिलेगी ट्रान्सफर, कब चढ़ेंगें हवाई जहाज पर
कब जायेंगे - मनाली-कश्मीर-अण्डमान
कभी ज्यादा इंतजार किया, कभी कम ।
कभी कुछ मिला, कभी नहीं।
तब भी इंतजार किया ।
कभी ज्यादा इंतजार किया, कभी कम
कभी थोड़ा मिला, कभी कुछ भी नहीं मिला,
तब भी इंतजार किया ----------।

उत्तम कुमार दास, स.ले.अधि.
एस.एन.डी. अनुभाग, मु.का., कोलकाता

प्रान्तीय ईर्ष्या-द्वेष को दूर करने में
जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी,
उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती ।
- सुभाषचंद्र बोस

* मेरा लक्ष्य - भ्रष्टाचार मुक्त भारत *

(प्रथम पुरस्कार)

भ्रष्टाचार मानव जीवन के व्यावहारिक एवं व्यापारिक दर्शन की वह कुंठित विचारधारा है, जिसने लगभग अपने आप को सभी जगह व्याप्त कर दिया है। वर्तमान में कभी-कभी हमें यह अपनी व्यावहारिकता का वो परिचय देता है, जहाँ हम भी इसे सही मानने लगते हैं। यह हमारे सामाजिक, बौद्धिक, नैतिक एवं राजनैतिक व्यवस्था के लिए अत्यंत भयावह है।

मेरे विचारानुसार आजतक हम भ्रष्टाचार को एक संकुचित परिदृश्य तक देख कर परिभाषित करते आये हैं। जबकि यह बीमारी हमारे जीवन दर्शन के सभी अंगों को संक्रमित कर चुकी है। अपने कर्तव्यों में किसी भी प्रकार का भ्रष्ट आचरण लाना भ्रष्टाचार है। यदि हम अपने निर्धारित कर्तव्यों के पालन में किसी भी प्रकार अनैतिक विचार लाते हैं तो वह भी भ्रष्टाचार है, उदाहरणार्थ - अपने काम को निर्धारित समय पर न खत्म करना भी एक प्रकार का भ्रष्टाचार ही है।

हमारा देश भारत एक महान देश है। इसने प्राचीन काल से ही विश्व के सामने स्वयं को एक मार्गदर्शक के रूप में सिद्ध किया है। संभवतः इन्हीं कारणों से भ्रष्टाचार जैसा विषय हमारे लिए एक राष्ट्रीय आपदा के समान है। प्रश्न यह उठता है कि हम ऐसी स्थिति में कैसे पहुँच गये। यदि हम इस प्रश्न का उत्तर खोजने की चेष्टा करें- तो हम सभी अपने-अपने स्तर पर कई रोमांचक राजनैतिक एवं सामाजिक कारण देकर वाह-वाही लूट सकते हैं। परन्तु 21वीं सदी का विश्व, हम क्या थे की विचारधारा पर नहीं चलता है वरन् हम क्या हैं व क्या हो सकते हैं की बात करता है।

उपरोक्त संदर्भो के आलोक में भारत को भ्रष्टाचार मुक्त बनाना हमारा परम लक्ष्य होना चाहिए। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु हम चाहे जो भी माध्यम का चुनाव करें उसमें सार्थकता व व्यावहारिकता का भाव होना नितांत आवश्यक है।

भ्रष्टाचारमुक्त भारत की परिकल्पना कोई मिल का पत्थर नहीं है। इसके लिए केवल हमें उन मार्गों को अपनाना है जिसे अपनाकर कई राष्ट्रों ने अपने आप को इस संक्रमण से मुक्त किया है।

भारत में चुनाव एक पर्व के समान होता है । इस पर्व में हम सभी बड़े उत्साह के साथ भाग लेते हैं । लेकिन यह पर्व बहुत ही खर्चीला होता है । चुनाव में भाग लेने वाले कई उम्मीदवार धन व बल के दम पर चुनाव लड़ते हैं। ऐसे ही लोग चुनाव जीत जाने के बाद भ्रष्टाचार जैसे मामलों में लिप्त पाये जाते हैं। अतः हमें इस व्यवस्था में बदलाव लाना होगा । चुनाव में पार्टियों के द्वारा खर्च की जाने वाली राशि का निर्धारण करना होगा।

हमारे देश को एक भ्रष्टाचारमुक्त राष्ट्र बनाने में शिक्षा एक निर्णायक भूमिका निभा सकती है। वर्तमान शिक्षा पद्धति में हमें कुछ सुधार की आवश्यकता है । आज की हमारी शिक्षा पद्धति केवल धन अर्जन के सिद्धांत पर चल रही है, जिस कारण हम अपनी मौलिक विचारधाराओं से टूटते जा रहे हैं। पैसे कमाने की होड़ ने भ्रष्टाचार रूपी दानव के भरण-पोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

21वीं सदी तकनीक की सदी है, तकनीक ने हमारे जीवन को बहुत प्रभावित किया है। इसने हमारी जीवन-शैली में क्रांतिकारी बदलाव लाया है। मेरे विचार से यह तकनीक भारत को भ्रष्टाचारमुक्त बनाने में अपनी अहम भूमिका निभा सकता है। वर्तमान में डिजिटल इंडिया, डिजिटल गवर्नेन्स व डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर जैसे कार्यक्रम इसी विचार के समर्थन में प्रस्तुत किए गए हैं। डिजिटल व्यवस्था सरल है, इसमें सुगमता व पारदर्शिता का सिद्धांत होता है, जिस कारण इसमें भ्रष्टाचार की संभावना न के बराबर है। हमें इसका स्वागत करना चाहिए एवं इसमें अपनी सहभागिता सुनिश्चित करनी चाहिए।

अंततः हम कह सकते हैं कि हमें, 'मेरा लक्ष्य' के विचार को 'हमारा' लक्ष्य में परिवर्तित करना होगा, तभी हम भ्रष्टाचारमुक्त भारत की कल्पना को सिद्ध कर सकते हैं। हमें याद रखना चाहिए कि यह धरती गाँधी और सरदार भगत सिंह जैसे वीरों की है जहाँ उनका जीवन ही असंभव को संभव बनाने का उदाहरण है।

जय हिंद !

विवेक कुमार, कनि. अनुवादक
हिंदी कक्ष, मु.का., कोलकाता

विषयः- मेरा लक्ष्य- भ्रष्टाचार मुक्त

(द्वितीय पुरस्कार)

आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः- मनुस्मृति का यह उद्घोष है कि जो सदाचार से हीन हैं, सदाचार से रहित हैं, उन्हें वेद भी पवित्र नहीं कर सकते । आचार शब्द व्यापक अर्थ रखता है व्यक्ति, समाज, देश एवं विश्व परिप्रेक्ष्य में।

भ्रष्टाचार को मिटाने का उद्देश्य उर्वर मस्तिष्क में ही पनप सकता है, क्योंकि मस्तिष्क में उत्पन्न विचार ही कर्म करने के लिए प्रेरित करते हैं। शिक्षा, वातावरण एवं प्रशिक्षण उद्देशपूर्ति के मार्ग प्रशस्त करते हैं, सहायता करते हैं लक्ष्य पाने में।

हमारा देश ज्ञानियों से भरा पड़ा है जिनकी बौद्धिक क्षमता एवं उपलब्धि काफी है परंतु 'ज्ञान: भारं क्रिया: बिना' अर्थात ज्ञान को यदि क्रियान्वित नहीं किया जाए तो वह भार ही होता है। भ्रष्टाचार मिटाने की जानकारी हमें है पर हम वैसा आचरण नहीं करना चाहते जिससे भ्रटाचार मिटाने में निर्णायक सफलता मिले । इसी मानसिकता को बदलने के लिए व्यक्तिगत स्तर पर, सामाजिक स्तर पर एवं राष्ट्रीय स्तर पर क्रमशः आत्मचिंतन, व्यापक सजगता का प्रचार एवं महाभियान चलाने की महती आवश्यकता है।

देश का प्रत्येक मस्तिष्क सदाचार-कदाचार में विवेकपूर्ण अंतर कर सके, इसकी शिक्षा प्राथमिक स्तर के विद्यालयों एवं माता-पिता, गुरूजन से ही संभव है। बड़े होने पर, नागरिक को राष्ट्रीय संविधान की आत्मा एवं भ्रष्टाचार के घाटे, अर्थात राष्ट्रीय अहित के प्रति सजग करना आवश्यक है। राष्ट्रीय स्तर पर महाभियान चलाना - एक तरफ तो भ्रष्टाचार से देश की हानि के प्रति जन-जन को जागरूक करने हेतु और दूसरी तरफ दंडात्मक कार्रवाई जिससे सदाचारी कदाचारी एवं भ्रष्टाचारी बनने से डरे । विवेकहीन केवल डरकर ही अच्छा कार्य कर सकते है, इसलिए दंडात्मक कार्रवाई होनी ही चाहिए।

भ्रष्टाचार की दिशा एवं दशा ओक्टोपस की तरह बहुविध होती है । ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहाँ विवेकपूर्ण निर्णय लेकर भ्रष्टाचार को मात करना आवश्यक न हो । इसके बिना तो यह कभी नहीं जाएगा । शिक्षा, न्याय, प्रशासन आदि के क्षेत्र में फैला भ्रष्टाचार ही मूल भ्रष्टाचार है, जो पक्षपात, गरीब-अमीर मे भेदभाव एवं दयनीय जीवन-यापन के लिए नागरिकों को मजबूर करते हैं।

गांधीजी कहा करते थे कि अपने हर कार्य को करने से पहले सोचो कि इससे समाज के सबसे गरीब लोगों पर क्या प्रभाव पड़ेगा । अकेली यह सोच काफी है भ्रष्टाचार मिटाने के लिए । किंतु राष्ट्र स्तर पर इसे व्यवहार्य बनाने के लिए निरंतर विचार-विमर्श, प्रशिक्षण, कार्यशालाएं, जागरूकता अभियान का आयोजन आवश्यक है तभी एक कॉमन व्यक्ति किसी अराजक, भ्रष्टाचारी के भ्रष्ट कार्य के विरूद्ध आवाज बुलंद कर सकता है। केवल बहुसंख्यक सदाचारियों, जागरूक व्यक्तियों की बुलंद आवाज से ही भ्रष्टाचार एवं भ्रष्टाचारी नियंत्रित हो सकते हैं ।

कंप्यूटरीकरण से भ्रष्टाचार को कम करने में काफी सहायता मिली है । पारदर्शिता बढ़ी है। राष्ट्र को इस ओर अभी और तेजी से बढ़ना है क्योंकि रक्तबीज को नष्ट करना इतना आसान नहीं होता जिस प्रकार कैंसर को केवल केमोथेरेपी द्वारा ही नष्ट किया जा सकता है।

आचरण के लिए हमें हमारे संस्कार प्रेरित करते हैं । आचरण एक तरह से किसी क्षण विशेष में हमारे समक्ष उपस्थित वातावरण में हमारी प्रतिक्रिया होती है। परंतु यह प्रतिक्रिया विवेक सत हो तो वह भ्रष्टाचार को खदेड़ सकती है । इस तरह के विचारों से नागरिकों को लैश करने पर ही उनसे यह अपेक्षा की जा सकती है कि वे राष्ट्र को आगे रखकर अपने कार्य करेंगे ।

एक मजबूत राष्ट्रीय नेतृत्व देश में डिजिटलीकरण एवं शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक सुधार कर के ही राष्ट्र को भ्रष्टाचार से मुक्त कर सकता है जहाँ कि कोई अन्न, शिक्षा एवं चिकित्सा के अभाव में न मरे। एक नागरिक का केवल एक कर्तव्य है आत्मावलोकन यह अकेली क्रिया उसे भ्रष्टाचार के मार्ग पर कदम बढ़ाने से रोकेगी और भ्रष्टाचारियों के कारवां का एक-एक सदस्य धीरे-धीरे कम होता जाएगा।

भ्रष्टाचार रहित राष्ट्र के लिए केवल स्वप्न या 'विजन' काफी नहीं होगा । व्यक्तिगत पहल पहले एवं सामूहिक पहल साथ-साथ, यही भ्रष्टाचार को बेड़ी लगा सकते हैं । अपने आप से ही पूछना प्रारंभ करना पड़ेगा कि भ्रष्टाचार के पैमाने (स्केल) पर मैं कहाँ हूँ ? मुझे इस कैन्वास पर दिखना भी चाहिए या नहीं या फिर क्या भ्रष्टाचार अपरिहार्य है? 'वह हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं' - महाकवियों की यह वाणी जब कभी हमारे कानो में गूंजे तो हम सोचें कि 'स्वदेश का प्यार' भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने से तो कदापि नहीं बढ़ेगा ।

अतः उचित शिक्षा, दीक्षा, प्रशिक्षण, वातावरण तैयार करने की ओर उठाया गया प्रत्येक कदम भ्रष्टाचार के ताबूत पर एक कील साबित होगी, जो प्रत्येक नागरिक को प्रत्येक क्षण जागरूक रहकर भ्रष्टाचार रहित भारत बनाने के सपने को पूरा करने के लिए समर्थ बनाएगी,

स्व-अभिप्रेरित करेगी एवं हृदय के अंतरतम स्तर पर " जय हिंद " का आशय 'जय भ्रष्टाचार रहित हिंद' समझने के लायक बनाएगी । 'लायक देश, लायक नागरिक', 'लायक नागरिक, लायक देश' यह सोचने का शिक्षण-प्रशिक्षण, दशा-दिशा देने पर ही हमारा सपना पूरा हो सकेगा । ईश्वर हम देशवासियों को 'भ्रष्टाचार की आवश्यकता राष्ट्र को नहीं है' समझने की शक्ति दें । 'आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः' एक बार पुनः ।

जय हिंद !

मिथिलेश कुमार, भूतपूर्व वरि. अनुवादक
हिंदी कक्ष, मु.का., कोलकाता

हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही,
यही जनतंत्रात्मक भारत में राजभाषा भी होगी ।
- सी. राजगोपालाचारी

*मेरा लक्ष्य-भ्रष्टाचार मुक्त *

(तृतीय पुरस्कार)

भ्रष्टाचार मुक्त भारत की बात करने से पहले ये जरूरी है कि भारत में भ्रष्टाचार के कारणों को जाना जाये ।

भारत एक विकासशील देश है यहाँ की आधी आबादी अभी भी गरीबी में गुजर-बसर कर रही है। ऐसी स्थिति में यहाँ लोगों में पैसा, पद और प्रतिष्ठा कमाने की होड़ मची रहती है और इसी होड़ से भ्रष्टाचार का जन्म होता है।

भ्रष्टाचार खुद/व्यक्तिगत लाभ या किसी और को लाभ पहुँचाने के लिये अपने पद या पैसे का दुरूपयोग करके किया जाता है।

1947 ई. में जब भारत आजाद हुआ तो यहां के लोगों के जीवन स्तर में सुधार के लिये अनके कदम उठाये गये । सैकड़ों कारखाने खुले, बड़ी-बड़ी कंपनियाँ बनी । निर्माण कार्य जोर-शोर से होने लगे । सड़क से लेकर रेल तक और बिजली से लेकर डीजल, पेट्रोल तक सबके कारखाने फैक्ट्रियाँ खुली और यहीं से भ्रष्टाचार शुरू हो गया ।

लोग अपने-अपने व्यक्तिगत लाभों के लिए राष्ट्रीय दायित्व को छोटा समझने लगे । एक-दूसरे से बड़ा दिखने की होड़, ज्यादा से ज्यादा पैसे कामने की होड़ ने इस बीमारी को और लाइलाज किया ।

आज के दौर में जहाँ पैसे की इतनी वैल्यू है उसके सामने लोगों के नैतिक मूल्यों ने दम तोड़ दिया । ऐसा नहीं है कि सारे के सारे लोग चोर या भ्रष्टाचारी हैं मगर आज की पूँजीवादी दुनिया में बिना पैंसो के आपकी कोई वजूद नहीं है इसी चीज ने लोगों को भ्रष्टाचार की तरफ आँख मूँद लेने पर मजबूर कर दिया ।

जब हम भ्रष्टाचार मुक्त भारत की बात करते हैं तब हमें अपने देश के राजनेता और ब्यूरोक्रेट्स की याद आती है, ऐसा नहीं है कि आज भ्रष्टाचार का दौर ज्यादा है या सिर्फ भारत में ही भ्रष्टाचार है। भ्रष्टाचार तो पूरे विश्व में फैला हुआ है। मगर भारत जैसे गरीब देश जहाँ की 40% आबादी अभी भी अपने दो टाईम के खाने के लिये जद्दोजहद कर रही है वहाँ भ्रष्टाचार मुक्त भारत की शुरूआत हमें कहीं और से नहीं बल्कि खुद से शुरू करनी चाहिए । क्योंकि भारत में हर दूसरा व्यक्ति सरकार को, ब्यूरोक्रेसी को, नेताओं को, अफसरों को भ्रष्टाचार के लिए कोसता है मगर वही व्यक्ति चुनावों में पैसे लेकर किसी भ्रष्ट नेता को वोट देता है । वही व्यक्ति किसी ऑफिस में

अपना काम जल्दी कराने के लिए पैसे देता है और बाद में कोसता है। हम खुद व्यक्तिगत लाभ के लिए छोट-मोटे अनैतिक कार्य कर जाते हैं, जैसे कि सिग्नल पर बिना हेल्मेट के पकड़े जाने पर ट्रैफिक गार्ड को 100 का नोट देकर निकल जाना या अपने पद का रोब दिखाकर बिना जुर्माना दिये निकल जाना ।

हम 100 - 200 रू० की बातों का भ्रष्टाचार नहीं मानते और जब कोई नेता या अफसर करोड़ो के घोटाले में पकड़ा जाता है तो उसे कोसने लगते हैं। ये हमारे समाज की दोहरी मानसिकता का ही परिचायक है कि हम भ्रष्टाचार मुक्त भारत की बात तो करते हैं मगर खुद को भ्रष्टाचार मुक्त नहीं करते । इस दिशा में हमें एक ईमानदार और आत्ममंथन करने के बाद अच्छी पहल करने की जरूरत है। हमारे देश में भ्रष्टाचार के विरोध में कई आंदोलन हुये । अगस्त 2011 में जब अन्ना हजारें ने आंदोलन किया तो पूरे देश ने उनका समर्थन किया । उस आंदोलन ने एकबार तो भारत को जागृत किया मगर फिर हम सो गये ।

भ्रष्टाचार को सिर्फ नारों और भाषणों से खत्म नहीं किया जा सकता । ना ही अखबारों में लंबे-लंबे लेख लिखकर खत्म किया जा सकता है और ना ही मिडिया डिबेटों में जोर-जोर से बोलकर और आरोप-प्रत्यारोप कर । भ्रष्टाचार खत्म तभी किया जा सकता है जब इसकी शुरूआत हम खुद से करें । हम खुद से शपथ लें कि हम पैसे लेकर वोट नही देंगे । हम शपथ लें कि हम अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिये पैसे और अपने पद का दूरूपयोग नहीं करेंगे ।

हम ये निश्चय करें कि हमारे अगल-बगल होनेवाले भ्रष्टाचार को अनदेखा ना कर उसके विरोध में आवाज उठायें । हम ये प्रण करें कि हम आपने किसी रिश्तेदार या परिचित के लाभ के लिये अनैतिक कृत्यों का सहारा नहीं लेंगे ।

देश के सर्वोच्च पदों पर बैठे लोग का आचरण सर्वश्रेष्ठ हो इसके लिये उनकी संपति का एक-एक रूपये का हिसाब रखा जाए या उसे सरकार के अधीन कर दिया जाए ताकि भ्रष्टाचार की गुंजाईश ही न रहे ।

सभी लोक सेवकों की संपति का विवरण हमेशा सार्वजनिक रहे तथा समय-समय पर स्वायत संस्थायें उनका ऑडिट करे । भारत सरकार और प्रशासन के सर्वोच्च पदों पर उन्हीं लोगों को रहने दिया जाए जिनकी सत्यनिष्ठा, ईमानदारी सर्वविदित हो और उन पर कोई दाग ना हो। जय हिन्द !

राहुल कुमार, एम टी एस
प्रशा.-केंद्रीय अनु., मु.का., कोलकाता

* स्वदेश प्रेम बनाम भ्रष्टाचार विरोध *

" उठो, सोचो और एक अलख जगाओ भ्रष्टाचार मुक्त जीवन की कसमें खाओ । "

आइए आगे बढ़ने से पूर्व हम यह समझने का प्रयास करें कि भ्रष्टाचार क्या है?

भ्रष्टाचार, जो दो शब्दों के मेल से बना है, स्पष्ट है कि यह शब्द स्वयं में ही नकारात्मकता का प्रतीक है, बुराई का प्रतीक है एवं अशोभनीय है । भ्रष्टाचार को परिभाषित करते हुए हम कह सकते है कि व्यक्तिगत लाभ स्वयं लेना या किसी को देना ही भ्रष्टाचार है।

डॉ. इकबाल ने कहा है- " सारे जहाँ से अच्छा हिंदुस्तां हमारा "

हम भारतीय हैं, यह निश्चित ही हमारे लिए एक गर्व की बात है । सोने की चिड़िया के रूप में जानी जाने वाली इस धरती को हम भ्रष्टाचार के आगोश में जाते हुए देख रहे हैं । भारतीय होने के नाते हमारा यह दायित्व है कि हम देश को भ्रष्टाचार से मुक्त कराने को अपना लक्ष्य बनाएं । ऐसा कर ही हम देश के प्रति अपने दायित्वों का निर्वाह कर पाएगें और देश के प्रति अपने प्रेम को प्रदर्शित कर पाएंगे ।

" भरा नहीं जो भावों से बहती जिसमें रसधार नहीं
हृदय नहीं वह पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं । "

जी हां, अगर भ्रष्टाचार को देख हमारा दिल नहीं दुखता है तो हम पत्थर दिल वाले कहे जाएंगे । देश का नागरिक होने के नाते भ्रष्टाचार के क्षेत्र की पहचान करना, इसे दूर करने के लिए योजना बनाना और समय पर तथा उपयुक्त तरीके से इसका कार्यान्वयन करना मेरा भी एक दायित्व है ।

वे क्षेत्र जहां से भ्रष्टाचार दूर करने की जरूरत है उनकी चर्चा हम निम्न प्रकार से कर सकते हैं-

(i) व्यक्तिगतः- व्यक्ति समाज और देश की एक इकाई है । अगर एकाई ठीक होगी तो सब कुछ ठीक हो जाएगा । घूस देकर व्यक्तिगत लाभ लेना तो हमारी आदत बन चुकी है । अगर व्यक्ति यह सोचे कि हम बदलेंगे तो जग बदलेगा तभी वह अपनी जिम्मेदारियों का देश और समाज की प्रति ठीक से निर्वाह कर पाएगा । व्यक्ति स्वार्थ और अहंकार को दूर रखते हुए यदि

हर व्यक्ति नियम और कानून का पालन करे तो वह भ्रष्टाचार की समाप्ति में अपना योगदान दे सकता है ।

(ii) शिक्षा का क्षेत्रः- आज हर व्यक्ति शिक्षित होना चाहता है । माता-पिता अपने बच्चों को शिक्षित करना चाहते हैं । परंतु शिक्षा का क्षेत्र भी भ्रष्टाचार से अछूता नहीं है । गलत तरीके से अयोग्य शिक्षकों की नियुक्ति एवं पैसा लेकर कमजोर छात्रों का अच्छे संस्थानों में नामांकन इसका एक उदाहरण है । इसके लिए सरकार की नीतियों का क्रियान्वयन और अनुपालन ठीक ढंग से किया जाना चाहिए ताकि यह क्षेत्र भ्रष्टाचार मुक्त हो सके ।

(iii) राजनीति का क्षेत्रः- ऐसा लगता है राजनीति भ्रष्टाचार का ही एक पर्याय बनता जा रहा है । लुभावने वादे, पैसे से मतदाताओं को अपनी ओर आकर्षित करना सभी दलों का एक मुख्य कार्य लगता है । चुनाव आयोग एवं सरकारी तंत्र यदि इसके लिए ठीक से अपने दायित्वों का निर्वाह करे तो मैं समझता हूँ कि इस क्षेत्र में बदलाव आ सकता है । स्वच्छ राजनीति हमेशा देश और जनता के हित में होती है ।

(iv) मीडिया का क्षेत्रः- छोटी खबरों को बड़ा बनाना और बड़ी खबरों को जनता के सामने आने न देना यह मीडिया का काम नहीं होना चाहिए । जनता को भ्रष्टाचार से मुक्ति में मीडिया एक अहम किरदार अदा कर सकता है । चाहे वह प्रिंट मीडिया हो या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया । मैं समझता हूँ उन्हें अपने आदर्शों का निर्वाह ठीक से करना चाहिए और भ्रष्टाचार के विरूद्ध लोगों को जागरूक करना चाहिए ।

(v) स्वास्थ्य का क्षेत्रः- अच्छी सेहत हर नागरिक का अधिकार होता है । इसके लिए सरकार ने काफी व्यवस्था कर रखी है। परंतु देख कर यह खेद होता है कि सरकारी अस्पतालों में मरीजों के साथ काफी खराब बर्ताव होता है । डॉक्टर दोहरे मानदंडों को अपनाते हैं । मरीजों की स्थिति के अनुसार उनसे भेदभाव करते हैं । जिसके कारण उन्हें सही इलाज नहीं मिल पाता है । दूसरी और प्राइवेट अस्पतालों में लूट-खसोट का माहौल है । छोटी बिमारी को बड़ा बताकर लोगों को लूटा जाता है । मुझे लगता है कि यदि सरकार इस ओर ध्यान दे और जनता भी अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हो तो इस क्षेत्र को भ्रष्टाचार से मुक्त किया जा सकता है ।

(vi) बैंकिग का क्षेत्रः- अपात्र को ऋण देना और पात्रताधारी को इससे वंचित रखना भी एक प्रकार का भ्रष्टाचार है । इस में हमारा बैकिंग सिस्टम संलिप्त पाया जाता है । बैंक किसी भी देश के विकास की रीढ़ होती है । यदि इस क्षेत्र को भ्रष्टाचार से मुक्त रखा जाए तो यह देश की उन्नति में एक मत्वपूर्ण कदम होगा । और बेघर लोग होम लोन लेकर घर बना पाएंगे और अपने परिवार को सुरक्षित जीवन दे पाएंगे ।

(vii) पुलिस का क्षेत्रः- पुलिस भ्रष्टाचार से मुक्ति का द्योतक होता है । समाज में सरकार के नियमों और कानूनों का अनुपालन सुनिश्चित करना उनका दायित्व होता है । परंतु अफसोस के साथ यह कहना पड़ रहा है कि यह क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है । आपराधिक गतिविधियों को

उस हद तक नहीं रोका जा रहा है जहाँ तक इसे रोका जाना चाहिए । मुझे लगता है कि भ्रष्टाचार को हर स्तर पर रोकने में पुलिस एक अहम भूमिका निभा सकती है ।

उपरोक्त बिंदुओं पर चर्चा करने पर हम देख पाते हैं कि भ्रष्टाचार को दूर करना थोड़ा कठिन जरूर है परंतु नामुमकिन नही हैं ।

देश से भ्रष्टाचार को हटाने के लिए मैं निम्न पंक्तियों को समर्पित करता हूँ, भ्रष्टाचार विरोध को प्रेम का प्रतीक मानते हुएः-

" ये ईश्क नहीं आसां, बस इतना समझ लिजे
एक आग का दरिया है और डूब के जाना है। "

नूर आलम, वरि. अनुवादक
हिंदी कक्ष, मु.का., कोलकाता

हिंदी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं
बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है ।
- विलियम केरी

"महक"

रुकैया को खाना बनाने में कमाल की महारत हासिल थी। आठवीं में थी तो उसने घर में खाना पकाने की तरबीयत अपनी मां से हासिल करनी शुरू कर दी थी। रुकैया अपने मां बाप की इकलौती बेटी थी, उसका पकाया खाना ना सिर्फ रिश्तेदारों में बल्कि आस पड़ोस के लोगों में, उसके बाप के दोस्तों में और मां की सहेलियों में काफी मशहूर था। वह लोग तो उसके खाने की तारीफ करते नहीं थकते थे। रुकैया की शादी हुए एक साल हो चुका था मगर अब भी स्कूल से लेकर यूनिवर्सिटी तक की सहेलियां अपनी शादियों के बाद भी उस से ना सिर्फ खाना बनाने की तरकीबें पूछा करती थी बल्कि उसे अपने घर भी बुलाती थी ताकि वह उन्हें तरह तरह की पकवान बनाने के बारे में बताए। हांडी चिकन, मटन कड़ाही बनाने में उसका कोई सानी नहीं था। कोई भी चीज तैयार करना होता उसके लिए उससे कोई खास वक्त की जरूरत नहीं पड़ती थी । खास डिश तैयार करने के लिए उसे तकरीबन 2 से 3 घंटे लगते थे। हर चीज को वह सिर्फ उतना ही गर्म करती थी जितना उसके लिए जरूरी होता था ना एक डिग्री कम ना एक डिग्री ज्यादा। कौन सा डिश कितने घंटे, कितने मिनट, कितने सेकेंड और कितनी गर्मी पर पकता है उसको जुबानी याद था।

इतवार की छुट्टी थी, उसका शौहर खुर्रम भी घर पर ही था। रुकैया ने रोज की तरह मेज पर दोपहर का खाना निहायत सलीके से लगा दिया। आज वह अपने पति की खातिर अच्छे तरीके से करना चाहती थी। मटन की बोटियां नगीनों की तरह प्लेट में दहक रही थी। पूरा कमरा गोश्त की खुशबू से महक रहा था। रुकैया ने खुर्रम के सामने प्लेट रख दिया। खुर्रम ने पहला निवाला लिया और आहिस्ता-आहिस्ता खाने लगा। रुकैया ने बड़े शौक से पूछा:

"कैसा बना है?"

"बहुत अच्छा" खुर्रम ने छोटा सा जवाब दिया

"कितना अच्छा?"

"इतना अच्छा कि अगर बादशाह को पेश किया जाता वह तो तुम्हें हीरो में तौल देता"

"बस.....?"

“रुकैया, क्या फिर वही बहस होगी?”

“हां..... वही”

“सुनो रुकैया मैं तुमसे झूठ नहीं बोल सकता, मगर फिर तुम मेरा यकीन नहीं करोगी”

“घुमा फिरा कर बात क्यों कर रहे हो?” रुकैया ने मायूसी से कहा - “साफ क्यों नहीं कह देते कि मेरा पकाया हुआ खाना इतना अच्छा नहीं जितना तुम्हारी मां पकाती थी”

खुर्रम ने कहा: “रुकैया तुम्हारे पकाये हुए हर खाने की जिस कदर तारीफ की जाए कम है लेकिन मेरी मां के हाथों में एक खास ‘महक’ होती थी वह महक तुम्हारे खानों में नहीं होती”

“मेरी समझ में नहीं आता” रुकैया की आवाज भर्रा गई।

“मैं बेहतरीन गोश्त, साफ-सुथरी सब्जियां, महंगे-महंगे मसाले खरीदती हूं, किचन में घंटों लगी रहती हूं मेरे पास नए मॉडल के चूल्हे हैं नए-नए नुस्खे हैं उसके बावजूद मेरे खानों में वह खास ‘महक’ पैदा नहीं होती। आखिर तुम्हारी मां खानों में कौन सी खुशबू, कौन सा इत्र डालती थी काश मुझे मालूम होता”

“मैं तो सिर्फ इतना जानता हूं रुकैया की उनके मरने के बाद मुझे वैसा खाना कभी नसीब नहीं हुआ”

“खैर रहने दो मुझे तुम्हारे खाने भी बहुत पसंद है जहां तक मेरी मां का सवाल है उन जैसी औरतें दुनिया में कभी-कभार ही पैदा होती है”

कई महीनों से हर खाने पर यही सिलसिला चल रहा था। रुकैया को कुछ समझ में नहीं आ रहा था क्योंकि उसकी सहेलियों के घर वाले तक उसके पकाए खाने को खाने के बाद उंगलियां चाटते रहते थे। उसके बनाए खानों की महक उसके आस पड़ोस के लोगों को तंग करती थी| बेशक वह बहुत अच्छा खाना बनाती थी, खुर्रम भी भरपूर और बहुत प्यार से भर पेट खाना खाता था, लेकिन जब भी मां और बीवी की तुलना आपस में की जाती तो बात खास ‘महक’ पर आकर खत्म हो जाती। बहरहाल यह सिलसिला चलता रहा।

आज रुकैया और खुर्रम की शादी की सालगिरह का दिन है तभी तो उसके मां-बाप का फोन आया कि वह भी आ रहे हैं रुकैया बहुत खुश थी। वह दिल ही दिल में सोच रही थी कि आज अपने घर वालों के सामने खुर्रम से अपने खाने की तारीफ जरूर करवाएगी। वह यकीनन आज उस खास 'महक' को लाने में जरूर कामयाब हो जाएगी। रुकैया इलाके के सबसे अच्छी दुकान से गोश्त खरीदने के लिए निकली। रुकैया के लिए गोश्त बनाते वक्त मटन सेंटर वाला हमेशा एक जौहरी की तरह नजर आता। छांट-छांट कर बेहतरीन पीस निकालता बारीकी से, सफाई से, एक जैसे वजन वाली खूबसूरत बोटियां, जैसे किसी नेकलेस में लगाने के लिए तराशे गए हीरे हो। सब कुछ खरीद कर वह घर वापस आए इतने में तो घरवाले भी पहुंच चुके थे। उधर किचन मैं खाना और अलग-अलग डिश बनना शुरू हो गई थी । आखरी बारी मटन कड़ाही की थी। रुकैया अपनी मां की बातें भी सुन रही थी जो किचन के साथ ही टीवी लाउंज में बैठी थी । रुकैया कड़ाही बनाते-बनाते बातों ही बातों में अपनी मां के पास आकर बैठ गई। इत्तेफाक से चूल्हे की लौ ऊंची रह गई इसलिए कड़ाही थोड़ी जल गई गोश्त भी थोड़ा खराब हो गया। उसने जल्दी से चुल्हा बुझाया और जली कड़ाही से दूसरी बोटियां अलग कर ली। गोश्त जल जाने पर उसे बहुत अफसोस हुआ और गुस्सा भी बहुत आया। ख़ैर हर बाकी खानों की तरह मटन कड़ाही को भी खाने की मेज पर लगा दिया गया और सब लोग रुकैया का इंतजार करने लगे क्योंकि गुस्से की वजह से वो अपने कमरे में चली गई थी खुर्रम के बुलाने पर खाने की मेज पर आई। लेकिन आज खुर्रम के सामने बैठी नहीं बल्कि खड़ी रही। उसने सोचा कि अगर खुर्रम के जबान से एक भी नुक्ताचीनी वाले कुछ शब्द निकले तो वह खामोश नहीं रहेगी। इतने में खुर्रम ने अपनी पसंदीदा डिश मटन कड़ाही में से थोड़ा सा डिश निकाला, पहला निवाला मुंह में रखा, अब पूरी इत्मीनान से दो-तीन बार चबाया। रुकैया उसके चेहरे पर नजर जमाई हुई थी।

अचानक खुर्रम जोर से चीखा.....

"अरे..... ओ हो....."

"क्या बात है?" रुकैया फुंफकारी

"तुमने आज खाने में क्या मिला दिया? तुम कामयाब हो गई रुकैया..... कामयाब हो गई तुम...."

"कामयाब.....?"

रुकैया को कुछ समझ में नहीं आया बल्कि वह और परेशान हो गई।

“हां भाई, आज तुमने कमाल कर दिया। बिल्कुल मेरी मां जैसा खाना पकाया है, वही महक, वही मज़ा.....। इस खाने में वह सब कुछ है जो मेरी मां की खानों में होता था।

रुकैया ने इत्मिनान का सांस लिया और खुर्रम के सामने वाली कुर्सी पर बैठ गई और सोचने लगी - इस ‘खास महक’ के लिए 3 घंटे बावर्चीखाने में लगाने की क्या जरूरत है, आखिर खाना जलाने में वक़्त ही कितना लगता है।

मो. युसुफ रहमानी, व.ले.प.,
वा.लेखा अनु., मु.का., कोलकाता

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है ।

- महात्मा गांधी

*** समाप्त ***